

वास्तविक योगी का स्वरूप एवं विवेचन

स्नेहा

योग सार्वकालिक उपयोगी विद्या है और योगी समाज में समरसता तथा जाति की संकीर्ण भावना के विनाश के लिए सदैव तत्पर होता है। योगी में करुणा होती है, जो समाज के दलित-वंचित तथा निर्बल गर्ब को सामाजिक, आर्थिक रूप से समुन्नत करने में सहायक होती है। योगी सर्वत्र एक ईश्वर का दर्शन करता है, अतएव उसका चित्त कभी संकीर्ण नहीं होता।

21 जून को संयुक्त राष्ट्रसंघ ने विश्व योग-दिवस के रूप में मान्यता प्रदान की है। योग भारत की ही प्राचीन विधा-विद्या है, जिससे तन तथा मन स्वस्थ और प्रसन्न रहते हैं। स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है। स्वस्थ तन तथा स्वस्थ मन वाला व्यक्ति स्वयं, परिवार, समाज, देश तथा विश्व का कल्याण सकता है। योग मन को साधने की वह विशिष्ट कला है, जिससे वह कुर्मांग से हटकर सुमार्ग की ओर जाता है। योगी का तात्पर्य है, चिन्तनशील महात्मा, भक्त सन्यासी, योगदर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी आदि।